ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 3 | Issue 4 | April 2025
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i4.127

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता का अध्ययन

सत्येन्द्र कुमार[1], डॉ. प्रतिभा सागर[2]

[1]Research Scholar, Department of B.Ed./M.Ed. (IASE), M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly (Uttar Pradesh)
Email: skumar844539@gmail.com
[2]Department of B.Ed./M.Ed. (IASE), M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly (Uttar Pradesh)
E-Mail: p.sagar.ru@gmail.com

शोध–सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 100 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया। अध्ययन हेतु डॉ.सरिता दहिया एवं डॉ. रजनी दहिया द्वारा विकसित ''एजुकेशनल एंग्जायटी स्केल'' का उपयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रतिशतता विश्लेषण एवं टी–मान जैसी सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर प्रस्तुत शोध अध्ययन में छात्राओं की शैक्षणिक दुश्चिंता की तुलना में छात्रों की शैक्षणिक दुश्चिंता अधिक पायी गयी, जिसका संभावित कारण वर्तमान समय में चल रही बेरोज़गारी की समस्या और छात्राओं की अपेक्षा छात्रों को परिवार की आय के मुख्य स्रोत के रूप में देखे जाने की प्रवृति हो सकती है। शिक्षा एवं रोजगार एक दूसरे से परस्पर जुड़े हुए हैं, जिसका सीधा असर विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता पर पड़ता है।

प्रस्तावना:

शिक्षा जीवन की वह विशिष्ट प्रक्रिया है, जो जीवन को निरन्तर नया रुप और आयाम प्रदान करती है। शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक, संवेगात्मक व भावात्मक पक्ष के विकास में सहायक होती है तथा समाज के लिये एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिये व्यक्ति को आवश्यक कौशल उपलब्ध कराती है। माध्यमिक शिक्षा न केवल शिक्षा और व्यावसायिक जीवन के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी है बल्कि शिक्षा का एक वास्तविक आधार है, क्योंकि माध्यमिक शिक्षा के अन्तर्गत किशोर बालकों व बालिकाओं के भावी जीवन को दिशा व दशा प्रदान की जाती है। माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की आयु प्रायः 14–18 वर्ष होती है, इस अवस्था को **स्टेनले हॉल** ने आंधी तूफान की अवस्था भी कहा है। ऐसी स्थिति में माध्यमिक शिक्षा की भूमिका और भी व्यापक हो जाती है, क्योंकि यह अवस्था विभिन्न प्रकार की योग्यताओं, क्षमताओं, कौशलों, आशाओं व आकांक्षाओं का योग है, किन्तु यह भी सत्य है कि विद्यालयी शिक्षा के दौरान कई बार बच्चों में नकारात्मक प्रवृत्तियॉ व नकारात्मक व्यवहार भी विकसित हो जाते है। इन्ही में से एक नकारात्मक प्रवृत्ति है ''चिन्ता'', चिन्ता से बालक का शैक्षिक अधिगम निष्पादन, अभिप्रेरणा व सृजनात्मक भी नकारात्मक

ढंग से प्रभावित होते हैं। जब व्यक्ति चिन्ताग्रस्त होता है, तो उसके मन में नकारात्मक विचारों की अधिकता होने लगती है। जिस कारण से व्यक्ति अपने कार्य पर ध्यान केन्द्रित नही कर पाता है। चिन्ता का एक रुप शैक्षणिक दुश्चिंता भी है। शैक्षिक दुश्चिंता एक स्थिति जन्य चिंता है। विद्यालय का प्रांगण विशिष्ट शिक्षक व विद्यालय गतिविधियॉ कई बार कतिपय विधार्थियो में भय उत्पन्न करती है। जिनसे बालक दूर भागना चाहता है या विद्यालय में अध्ययन नहीं करना चाहता है । यह स्थिति ही शैक्षिक दुश्चिंता है। कतिपय लोगों का मत है कि शैक्षिक दुश्चिंता केवल परीक्षा सम्बन्धी होती है जिसमें बालक अनेक प्रकार के भय से घिरा होता है किंतु मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि शैक्षिक दुश्चिंता परीक्षा, विद्यालय वातावरण, विषय विरोध, पाठ्यक्रम, कक्षा साथियों, खेल के मैदान व शिक्षकों से संबन्धित हो सकती है। शैक्षिक दुश्चिंता को मनोवैज्ञानिकों द्वारा अग्र प्रकार से परिभाषित किया गया हैः–

कसौदी (2010) के अनुसार शैक्षणिक दुश्चिंता स्थितिजन्य चिंता का ही एक प्रकार है। शैक्षिक दुश्चिंता के साथ साथ परीक्षण सम्बन्धी चिंता तथा गणित, भाषा, विज्ञान व विदेशी भाषा की कक्षाओ के प्रति भय भी शामिल है"।

आइजनैक (2009) के अनुसार शैक्षणिक दुश्चिंता अप्रासंगिक विचारों के माध्यम से शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं की ओर ले जाती है। जिसके कारण ध्यान व एकाग्रता में कमी आ जाती है। शैक्षिक दुश्चिंता विद्यार्थी की उपलब्धि को सकारात्मक व नकारात्मक दोनों तरीके से प्रभावित करती है। सकारात्मक दृष्टि से देखा जाये तो निम्न स्तर की शैक्षिक दुश्चिंता जब बालक मे होती है, तो वह अपनी शिक्षा, परीक्षा व अधिगम के प्रति अधिक सचेत रहता है और अच्छा प्रदर्शन करने के अधिक प्रयत्न करता है। परन्तु यदि शैक्षिक दुश्चिंता का स्तर अधिक हो जाये तो उसका नकारात्मक प्रभाव देखा जाता है। बालक में शिक्षा के प्रति अरुचि, विद्यालय न जाना, विद्यालय के कार्यकलापों में भाग लेने से बचना व गृहकार्य अपूर्ण रहना आदि व्यवहार देखने में आता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

जब विद्यार्थी स्वयं को असफल समझने लगता है एवं अवसाद से घिर जाता है। वह घोर चिन्ता में ग्रसित होकर अपने को हीन समझने लगता है। जिससे हीनता की ग्रन्थि विकसित हो जाती है। वह अपने जीवन के लक्ष्य को छोड़ने पर मजबूर हो जाता है। स्वयं को अक्षम मानने के कारण व दुश्चिंता का शिकार होने लगता है। ऐसी स्थिति में विद्यालयो एवं उसके विभिन्न घटको जैसे–संस्थाप्रधान, अध्यापक सहपाठी तथा विद्यार्थी के आकांक्षा स्तर तथा शैक्षिक एवं व्यवसायिक आकांक्षाओ के स्तर को ऊंचा उठाये रखना नितान्त जरुरी है। ताकि विद्यार्थी किसी भी प्रकार की दुश्चिंता से ग्रसित न हों तथा अपने व्यक्तित्व का समुचित विकास करते हुये अपने उद्देश्यों की पूर्ण रुप से पूर्ति कर सकें। वैसे देखा जाये तो दुश्चिंता का कोई स्पष्ट कारण नहीं होता। दुश्चिंता से पीड़ित व्यक्ति तनाव, बैचेनी व घबराहट निरंतर अनुभव करता है । वह अपने आन्तरिक तनाव को कम करने के लिये तंत्रिकातापी प्रतिबल स्थितियों के प्रति आवश्यकता से अधिक प्रतिक्रिया करता है। वह ऐसे प्रतिरक्षा क्रिया तंत्रो का उपयोग करने लगता है, जो उसकी स्थिति का सामना तो नहीं कर पाते । किन्तु दुश्चिंता को अवश्य बढ़ा देते हैं। जिससे व्यवहार असामान्य हो जाता है तथा व्यक्ति असंगत क्रियाऐ करने लगता है या कर सकता है। शैक्षणिक दुश्चिंता का हमारे समाज के सभी सदस्यो द्वारा किसी न किसी रुप में सामना करना पड़ता है। क्योकि समाज के प्रत्येक सदस्य को शिक्षा के क्षेत्र से होकर गुजरना पड़ता है। जिससे उन्हें शैक्षणिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ये शैक्षणिक दुश्चिंता व्यक्तित्व के सामान्य विकास में अवरोध पैदा कर सकती है।

समस्या कथनः " माध्यमिक विद्यालयो में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता का अध्ययन"

प्रमुख शब्दों का परिभाषीकरण

माध्यमिक विद्यालयः प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों से तात्पर्य उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित कक्षा 9–12 तक शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालयों से है।

शैक्षणिक दुश्चिंताः प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षणिक दुश्चिंता से तात्पर्य शैक्षणिक संस्थान में आने वाली समस्याओं, चिंता, तनाव या भय की भावना से है जो शैक्षणिक कार्यों जैसे परीक्षा, असाइनमेंट, गणितीय संक्रियाओं सम्बन्धी समस्या, विज्ञान विषय सम्बंन्धी समस्या इत्यादि में असहजता महसूस करने से है ।

सह शैक्षणिक दुश्चिंताः प्रस्तुत शोध अध्ययन में सह शैक्षणिक दुश्चिंता के अंतर्गत माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के खेल, क्राफ्ट ,म्यूजिक इत्यादि के अंतर्गत आने वाली दुश्चिंता को शामिल किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता स्तर का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता का उनकें लिंग के आधार पर अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता का उनकी आवासीय अवस्थिति के आधार पर अध्ययन करना।
4. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता का उनके विद्यालय के प्रकार के आधार पर अध्ययन करना।
5. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता का उनके शैक्षणिक वर्ग के आधार पर अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें

1. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता का स्तर सामान्य है।
2. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक दुश्चिंता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञानं वर्ग विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का सीमांकनः

प्रस्तुत शोधपत्र में शोधकर्ता के द्वारा जनपद पीलीभीत के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्रतिदर्श को कुछ निश्चित सीमाओं में बांधा गया है जो कि निम्नलिखित हैं–

1. केवल पीलीभीत के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
2. जनपद पीलीभीत के माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 9 एवं 10 में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को शामिल किया गया है।

शोध विधिः

प्रस्तुत शोध में शोध विधि के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

जनसंख्याः

पीलीभीत जिले के समस्त यू.पी.बोर्ड से मान्यता प्राप्त माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में शामिल किया गया है।

न्यादर्शः

प्रस्तुत शोध कार्य में पीलीभीत जिले के यू.पी.बोर्ड के कुल चार माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरणः

प्रस्तुत शोध में डॉ. सरिता दहिया एवं रजनी दहिया द्वारा निर्मित एजुकेशनल एंग्जायटी स्केल का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीः

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी के रूप में प्रतिशत विश्लेषण, टी–परीक्षण का चयन किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्याः

प्रस्तुत शोध के आंकड़ों का विश्लेषण निम्न प्रकार से किया गया है।

तालिका संख्या 1.0

माध्यमिक विद्यालयो में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता स्तर का अध्ययन करना।

विद्यार्थियों में दुश्चिंता के प्रकार	विद्यार्थियों की संख्या	विद्यार्थियों की संख्या का प्रतिशत	विद्यार्थियों की कुल संख्या
Extremely High	02	02%	100
High	02	02%	
Above Average	1	01%	
Average	11	11%	
Below Average	15	15%	
Low	28	28%	
Extremely Low	41	41%	

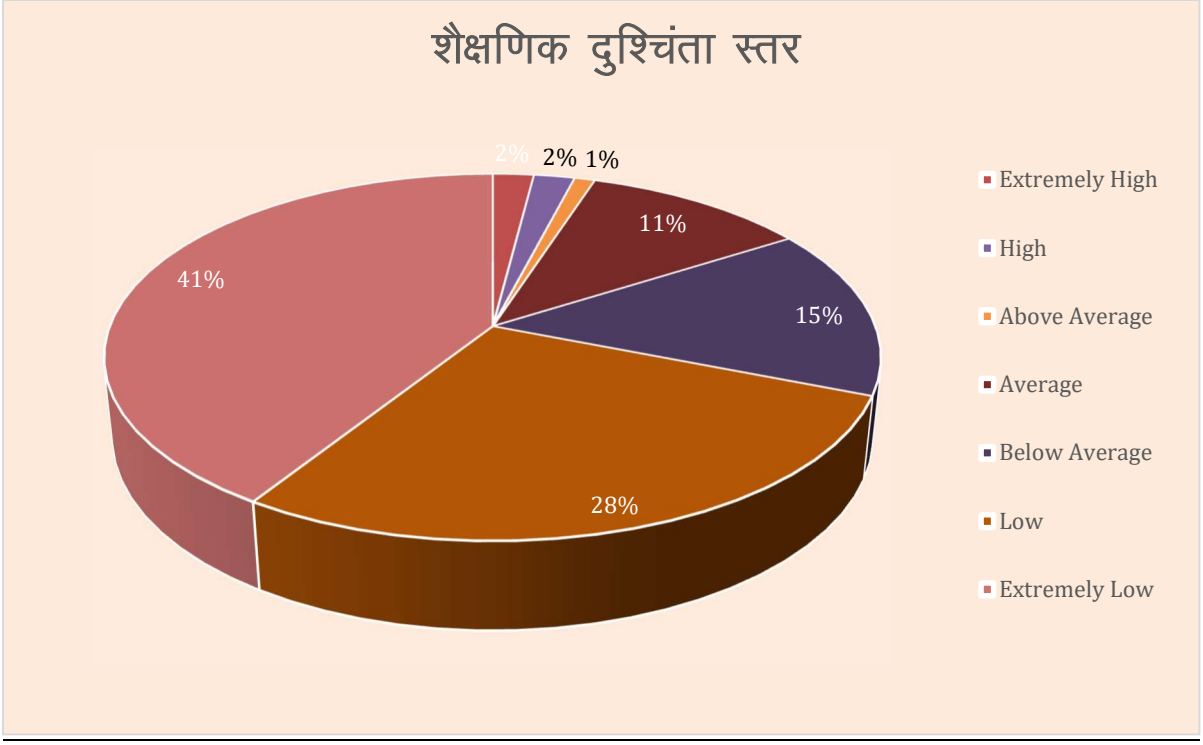

उपरोक्त तालिका 1.0 के अनुसार, पीलीभीत जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता स्तर की माप की गयी है। सारणी में प्रदर्शित आकड़ों के अनुसार 02% विद्यार्थियों में अत्यंत उच्च शैक्षणिक दुश्चिंता स्तर पाया गया, जबकि 02% विद्यार्थियों का शैक्षणिक दुश्चिंता स्तर उच्च पाया गया। इसके साथ ही 01% विद्यार्थियों का शैक्षणिक दुश्चिंता स्तर उच्च औसत पाया गया। 11% विद्यार्थियों का शैक्षणिक दुश्चिंता स्तर औसत पाया गया जबकि 15% विद्यार्थियों में औसत से निम्न दुश्चिंता स्तर पाया गया 28% विद्यार्थियों में निम्न दुश्चिंता स्तर पाया गया । 41% विद्यार्थियों का शैक्षणिक दुश्चिंता अत्यंत निम्न पाया गया।

तालिका संख्या 2.0

माध्यमिक विद्यालयो में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता का उनकें लिंग के आधार पर अध्ययन करना।

दुश्चिंता के प्रकार	लिंग का प्रकार	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान
शैक्षणिक	छात्र	55	49.00	10.324	3.21**
	छात्रा	45	42.24	10.639	
सह–शैक्षणिक	छात्र	55	45.89	10.392	2.72**
	छात्रा	45	41.04	6.519	
कुल	छात्र	55	94.89	19.353	3.29**
	छात्रा	45	83.29	14.934	

उपरोक्त तालिका संख्या 2.0 के अनुसार –

पीलीभीत जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का शैक्षिक शैक्षणिक दुश्चिंता स्तर के लिए टी– मान 3.21 पाया गया जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है।

पीलीभीत जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का सह–शैक्षिक शैक्षणिक दुश्चिंता स्तर का टी–मान 2.72 पाया गया जो की 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है।

पीलीभीत जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता स्तर का टी–मान 3.29 पाया गया जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है।

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से पता चलता है कि पीलीभीत जनपद के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक, सह–शैक्षिक एवं कुल जनसंख्या कि शैक्षणिक दुश्चिंता में सार्थक अंतर पाया गया। छात्रों का शैक्षिक, सह शैक्षिक एव कुल दुश्चिंता का मध्यमान क्रमशः (49.00, 45.89 एवं 94.89) पाया गया जो कि छात्राओं के मध्यमान क्रमशः (42.24, 41.04 एवं 83.29) से अधिक पाया गया। अतः छात्राओं की तुलना में छात्रों की शैक्षणिक दुश्चिंता अधिक पायी गयी, इसका कारण यह हो सकता है कि पीलीभीत जनपद कि अधिकांश जनसँख्या ग्रामीण परिवेश में निवास करती है, जिसकी वजह से अधिकांश जनसँख्या पितृसत्तात्मक विचारधारा का अनुसरण करती है जिसकी वजह से छात्रा एवं छात्र दोनों को शिक्षा के सामान अवसर प्रदान नहीं किये जाते है। पितृसत्तात्मक पारिवारिक संरचनाओं और वर्तमान समय में चल रही बेरोज़गारी की समस्या के बीच छात्राओं की अपेक्षा छात्रों को परिवार की आय के मुख्य स्रोत के रूप में देखे जाने की प्रवृति भी छात्रों की शैक्षणिक दुश्चिंता अधिक होने के पीछे एक बड़ा कारण हो सकती है।

तालिका संख्या 3.0

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता का उनकी आवासीय अवस्थिति के आधार पर अध्ययन करना।

दुश्चिंता के प्रकार	आवासीय अवस्थिति का प्रकार	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान
शैक्षणिक	ग्रामीण	71	44.68	10.893	1.85 NS
	शहरी	29	49.10	10.618	
सह–शैक्षणिक	ग्रामीण	71	42.41	8.132	2.27*
	शहरी	29	46.90	10.755	
कुल	ग्रामीण	71	87.08	17.098	2.24*
	शहरी	29	96.00	20.062	

उपरोक्त तालिका 3.0 के अनुसार –

पीलीभीत जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता स्तर का टी–मान 1.85 पाया गया जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया, जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

पीलीभीत जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों कि सह–शैक्षणिकदुश्चिंता स्तर का टी. मान 2.27 पाया गया जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया, जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है।

पीलीभीत जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता स्तर का टी मान 2.24 पाया गया जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया । जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है। माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि सह शैक्षणिक दुश्चिंता एवं कुल दुश्चिंता में शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान अधिक पाया गया। अतः शहरी विद्यार्थियों में शैक्षणिक दुश्चिंता अधिक पायी गयी। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि अधिकांश शहरी विद्यार्थी नौकरी से जीवन यापन करने पर निर्भर हैं, जबकि ग्रामीण विद्यार्थियों के पास नौकरी के साथ–साथ कृषि, पशु पालन इत्यादि संसाधन उपलब्ध होते हैं, जिसकी वजह से ग्रामीण विद्यार्थियों में शैक्षणिक दुश्चिंता कमी पायी गयी। साथ ही शहरी परिवेश में परिवार की ओर से एक दबाव भी होता है कि बालक शिक्षित होने के बाद रोजगार प्राप्त कर ही लें, यह अप्रत्यक्ष दबाव भी शहरी विद्यार्थियों की सह शैक्षणिक दुश्चिंता अधिक होने का एक सम्भावित कारण हो सकता है।

तालिका संख्या 4.0

माध्यमिक विद्यालयो में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता का उनके विद्यालय के प्रकार के आधार पर अध्ययन करना।

दुश्चिंता के प्रकार	विद्यालय के प्रकार	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान
शैक्षणिक	सरकारी	57	46.28	10.539	0.33 NS
	गैर–सरकारी	43	45.53	11.581	
सह–शैक्षणिक	सरकारी	57	44.63	9.284	1.16 NS
	गैर–सरकारी	43	42.49	8.921	
कुल	सरकारी	57	90.91	18.295	0.77 NS
	गैर–सरकारी	43	88.02	18.530	

तालिका 4.0 अनुसार –

पीलीभीत जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक शैक्षणिक दुश्चिंता स्तर का टी. मान 0.33 पाया गया जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

पीलीभीत जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों कि सह–शैक्षिक शैक्षणिक दुश्चिंता स्तर का टी. मान 1.16 पाया गया, जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

पीलीभीत जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों कि शैक्षणिक दुश्चिंता स्तर का टी मान 0.77पाया गया जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में पढने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

तालिका संख्या 5.0

माध्यमिक विद्यालयो में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता का उनके शैक्षणिक वर्ग के आधार पर अध्ययन करना ।

दुश्चिंता के प्रकार	विषय वर्गवार	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान
शैक्षणिक	क्ला	23	42.13	7.701	1.94NS
	विज्ञान	77	47.10	11.541	
सह–शैक्षणिक	कला	23	42.70	7.258	0.60 NS
	विज्ञान	77	44.01	9.661	
कुल	कला	23	84.83	12.265	1.45 NS
	विज्ञान	77	91.12	19.655	

तालिका 5.0 के अनुसार –

पीलीभीत जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कला एवं विज्ञान वर्ग में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक शैक्षणिक दुश्चिंता स्तर का टी. मान 1.94 पाया गया जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया, जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है ।

पीलीभीत जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कला एवं विज्ञान वर्ग में अध्ययनरत विद्यार्थियों कि सह–शैक्षिक शैक्षणिक दुश्चिंता स्तर का टी मान 0.60 पाया गया जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है ।

पीलीभीत जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कला एवं विज्ञान वर्ग में अध्ययनरत विद्यार्थियों कि शैक्षणिक दुश्चिंता स्तर का टी मान 1.45 पाया गया जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है। कला एवं विज्ञानं वर्ग में पढने वाले विद्यार्थियों कि शैक्षणिक दुश्चिंता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

शोध निष्कर्षः

प्रस्तुत शोध अध्ययन में छात्रों की शैक्षणिक दुश्चिंता छात्राओं कि तुलना में अधिक पायी गयी,शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में शहरी विद्यार्थियों में शैक्षणिक दुश्चिंता अधिक पायी गयी, सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया इसके साथ ही कला एवं विज्ञानं वर्ग में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता में भी कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. Agarwal, V. R. (1983). A study of reading ability in relation to certain cognitive and non-cognitive factors. Asian Journal of Psychology and Education, 11 (3),41-44.

[2]. Ahmad, S., Hussain, A, & Azeem, M. (2012). Relationship of academic SE to self-regulated learning, S I, test anxiety and academic achievement. International Journal of Education Vol. 4 (1), 12-25.

[3]. Ali, M. S. (2012). Establishing the construct validity and reliability of an Urdu translation of the Test Anxiety Inventory. The Assessment Handbook, 9, 15-26.

[4]. Chauhan, A. (2016). An Achievement Motivation and Academic Anxiety of School Going Students. Psychology and Behavioral Science International Journal, 1(4), 1-12

[5]. Chapell, M. S., Blanding, B., Silverstein, M. E., Takahashi, M., Newman, B., Gubi, A., & McCann, N. (2005).Test anxiety and academic performance in undergraduate and graduate students. Journal of Educational Psychology, 97 (2), 268-274

[6]. Ergene, T. (2011). The relationships among test anxiety, study habits, achievement, motivation, and academic performance among Turkish high school students. Education and Science. Vol. 36 (160), 320-330.

[7]. Hancock, D. R. (2001). Effect of test anxiety and evaluative threats on students' achievement and motivation. The Journal of Educational Research, 94 (5), 284-290.

[8]. Rezazadeh, M. & Tavakoli, M. (2009). Investigating the relationship among test anxiety, gender, academic achievement and years of study: A case of Iranian EFL university student. English Language Teaching, Vol.2 (4), 68-74.

[9]. Singh, A. K., & Gupta, A. S. (2009). Manual for Academic Anxiety Scale for Children (AASC). Agra, National Psychological Corporation.

[10]. Singh, S., & Thukral, P. (2009). The role of anxiety in achievement. Journal of Exercise Science and Physiotherapy, Vol. 5 (2) 122-125.

Cite this Article

सत्येन्द्र कुमार, डॉ. प्रतिभा सागर, ***माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंता का अध्ययन,*** *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 3, Issue 4, pp. 01-09, April 2025.*

Journal URL: *https://ijmrast.com/*

DOI: *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i4.127*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.